दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल न. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10 16/10/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 1 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 141 टिप्पणी (Remarks): Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) विरहा बुरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिस घटि बिरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।

संदर्भ व प्रसंग : प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकाल के विद्रोही कवि 'कबीरदास' द्वारा रचित तथा श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के विरह को अंग से उद्धृत है। कबीर यहाँ विरह के महत्व की स्थापना करते दिख रहे हैं।

व्याख्या : कबीर कहते हैं कि विरह को बुरा मत कहिए। प्रभु के प्रेम में विरह रत रहना कोई अधम कार्य नहीं है वह प्रभु प्रेम की प्राप्ति का आवश्यक मार्ग है वह तो राजा के समान है। अतः जिस घड़ी ईश्वर के विरह में साधक तप्त न हो वह क्षण मसान (शैतान) के समान है। वह क्षण बुरा है, विरह का क्षण नहीं

विशेष: 1. कबीर निर्गुण ईश्वर की आराधना में यहाँ भावनात्मक रहस्यवाद'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

का आधार लेते दिख रहे हैं।

2. भाषा: पँचमेली खिचड़ी जिसमें खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप दर्शित है

यथा अकारान्तता (सुल्तान, मसान) आदि। फारसी का प्रयोग भी दृष्टव्य है।

3. कबीर की उक्तियों में प्रेम का चरम रूप प्रदर्शित होता है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) तंत्रीनाद, कवित्त रस, सरस राग, रति रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग॥

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रसंग व संदर्भ: प्रस्तुत पद्यखण्ड 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है जहाँ बिहारी कविता के उद्देश्य को वर्णित कर रहे हैं। वे कविता के साथ अन्य कलाओं का उद्देश्य भी बता रहे हैं।

व्याख्या: बिहारी कहते हैं चाहे वह संगीत हो या कविता हो या फिर शृंगारपूर्ण स्त्री से प्रेम हो, इन सभी में पूरी तरह डूबकर इनका आस्वादन करना ही उचित होता है, तभी जीवन सार्थक बन पाता है। जो इनमें पूर्णतः डूब जाते हैं वे पार हो जाते हैं जबकि जो नहीं डूबते वे आनंद से वंचित रह जाते हैं।

विशेष: 1. काव्य व अन्य कलाओं में संबंध स्थापित किया गया है जैसे डॉ० नामवर सिंह ने रीतिकाल की सर्वत्र कलाओं में संबंध स्थापित किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. 'बूँदे' शब्द में यमक अलंकार का प्रयोग किया गया है।

3. ~~ब्रज~~ ब्रज भाषा का श्रृंगारपूर्ण स्वरूप द्रष्टव्य है।

4. ~~भूषण~~

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' के ~~नाग~~ 'नागमती वियोग खंड' से उद्धृत है। कवि यहाँ ऋतुओं के सापेक्ष नागमती के विरह का मार्मिक वर्णन कर रहा है।

व्याख्या: नागमती कहती है कि ~~मेरे~~ भरे भाद्रपद माह की अँधियारी रातें अत्यंत दुर्गम व कठिन हो गई हैं। मेरा महल सूना है क्योंकि प्रिय तो कहीं अन्यत्र ही चले गए हैं। मैं खाट की एक पाटी पकड़े अकेले अपलक अपने पति का इंतजार कर रही हूँ और ~~ऐसे~~ में मेरा हृदय फटा जा रहा है। जैसे ही बिजली चमकती है वैसे ही मेरे हृदय को विरह काल बनकर खाने दौड़ता है। अब माघ का महीना आ गया है तथा मेरे दोनों नेत्र ओरी'

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के समान धूँ (बह) रहे हैं। विरह के मारे मेरा बुरा हाल है। प्रिय की याद में मैं पूरी सूख गई हूँ।

विशेष: 1. नागमती के विरह की मार्मिक व्यंजना को आचार्य शुक्ल ने हिन्दी साहित्य की अमूल्य वस्तु कहा है' जिसका परम मनोहर रूप अति सुंदर है।

2. बारहमासा काव्य रूढ़ि का प्रयोग किया गया है।

3. 'ओरी' जैसे लोकप्रचलित ठेठ अवधी शब्दों के प्रयोग के कारण ही जायसी को 'अवधी का अरघान' कहा जाता है।

4. चुवहिं जसि ओरी' → उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं।।
वृथा बहति जमुना, खग बोलत, वृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार सँजीवनि, दधिसुत किरन भानु भइं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों, बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं।।

संदर्भ व प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश ~~आचार्य~~ आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित व सूरकृत भ्रमरगीत सार से उद्धृत है। यहाँ सूर कृष्ण की अनुपस्थिति में प्रकृति के प्रभाव का वर्णन करते हुए गोपियों की विरह दशा को चित्रित कर रहे हैं।

व्याख्या: गोपियाँ कहती हैं जो लताएँ पहले अत्यन्त सुन्दर व मनभावन लगती थी अब वे अग्निखण्ड के समान लगती हैं। व यमुना का बहना, पक्षियों की वाणी, कमल का खिलना व भ्रमर का गुंजन कृष्ण के न होने से किसी काम का नहीं सब व्यर्थ है। ये सब अब हमें जलाने का काम कर रहे हैं। हे उद्धव कृष्ण से जाकर हमारी व्यथा अवश्य कहना और उन्हें बताना कि गोपियों की आँखें आपके वियोग में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रतीक्षारत हैं।

विशेष: 1. प्रकृति पर विरह का आरोपण करते हुए 'संवेदन-आरोप' शैली का प्रयोग किया गया है।

2. 'अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं' में उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग

3. गोपियों के विरह चित्रण का मार्मिक विवरण सूर को विप्रलंभ शृंगार का सर्वोच्च कवि बना देता है।

4. ब्रजभाषा का सुन्दर, मार्मिक, भावप्रधान स्वरूप

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
.Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे जाति-पाँति, न चहौं काहू की जाति-पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौं काहूँ के काम को।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,
भारी है भरोसो 'तुलसी' के एक नाम को।
अति ही अयाने उपखानो नहिं बूझैं लोग,
'साह ही को गोत गोत होत हैं गुलाम को'
साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोज कहा,
का काहू के द्वार परौं? जो हौं सो हौं राम को।।

प्रसंग व संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश समन्वय के महानायक 'तुलसीदास' की 'कवितावली' के 'उत्तरकाण्ड' से उद्धृत है। यहाँ तुलसी सामाजिक समन्वय की स्थापना करते हुए जाति व्यवस्था का खण्डन करते दिख रहे हैं।

व्याख्या: तुलसी कहते हैं न तो मेरी कोई जाति है अर्थात न मुझे अपनी जाति पर गर्व है न ही मुझे किसी और की जाति से कोई सरोकार है। मुझे किसी से कोई कार्य नहीं। मेरा जीवन तो भगवान राम के भरोसे है, उन्हीं के नाम के सहारे मैं जीवन यापन कर रहा हूँ। लोग अत्यन्त सीधे एवं अनभिज्ञ हैं, इतना भी नहीं जानते कि जो प्रभु का गोत्र होता है दास का गोत्र भी वही होता है। मुझे साधु-असाधु होने की छोटी बातों की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चिन्ता नहीं; मैं तो जैसा भी हूँ भगवान राम का दास हूँ, किसी के दरवाजे तो जाता नहीं।

विशेष: 1. इन्ही पंक्तियों का उदाहरण देते हुए डा० रामविलास शर्मा ने तुलसी साहित्य के सामंतविरोधी मूल्यों को स्थापित किया है तथा तुलसी को प्रगतिशील बताया है।

2. 'गुलाम' जैसे फारसी शब्द का प्रयोग करते हुए तुलसी ने भाषाई समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

3. ब्रज भाषा पर तुलसी की पकड़ किसी अन्य कवि से कम नहीं है।

4. कवि द्वारा 'नाम-प्रयोग' की उक्ति का प्रयोग किया गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' पर अस्तित्ववाद तथा जेन बौद्धमत का प्रभाव कहाँ तक दिखाई देता है? विवेचन कीजिये। 20

असाध्यवीणा अज्ञेय के काव्यकर्म की प्रतिनिधि कविता मानी गई है जहाँ संवेदना और शिल्प उत्कृष्टतम रूप में दर्शित हुआ है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि अज्ञेय के जीवन पर सार्त्र के 'अस्तित्ववाद' व जेन बौद्धमत का प्रभाव रहा है। कई स्थानों पर स्वयं उन्होंने इस तथ्य को स्वीकारोक्ति दी है इसी संदर्भ में असाध्यवीणा पर भी इन विचारों का प्रभाव दिखता है।

अस्तित्ववाद की मूल धारणा है कि व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के अनुकूल प्रामाणिक निर्णय लेने चाहिए अन्यथा जीवन कृत्रिम हो जाता है। 'असाध्यवीणा' में भी वीणा के संगीत का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर उनके व्यक्तित्व के अनुकूल पड़ने का भाव व्यंजित हुआ है

" राजा ने अलग सुना
× × ×
रानी ने अलग सुना"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अस्तित्ववाद मानता है कि जब व्यक्ति अपनी प्रामाणिकता व व्यक्तित्व के अनुसार निर्णय लेता है तो उसकी क्षमताएँ बढ़ जाती हैं। ~~अस्तित्ववा~~

परन्तु अस्तित्ववाद को मानते हुए भी अज्ञेय ने सार्त्र के निरीश्वरवाद व नास्तिकता को स्वीकार नहीं किया है. उन्होंने 'स्वधर्म' की खोज 'समर्पणशक्ति' में स्वयं के अहं-विलयन के माध्यम से की है। इस रूप में कीर्केगार्द का प्रभाव अज्ञेय पर अधिक दिखता है क्योंकि ईश्वरीय शक्ति में विलयित होने से जो प्रभाव पड़ता है उससे 'युग पलट जाता है' तथा सब 'अपने-अपने काम लग जाते हैं'।

पुनः जैन बौद्धमत मानता है कि प्रत्येक भाव व वस्तु की सत्ता चेतन के स्तर पर ही है और आंतरिक साधना से ही बुद्धत्व की प्राप्ति की जा सकती है। प्रियंवद भी आंतरिक साधना के माध्यम से वीणा का संधान करता है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वह " डूब गया था स्वयं शून्य में ' ~~अपने~~ तथा वह ' मौन प्रियंवद ' वीणा को नहीं साध रहा था बल्कि स्वयं अपने को शोध रहा था ' उसने स्वयं को ~~किरीटी तरु~~ ' सघन ' निविड़ में सौंप दिया था उसी किरीटी तरु को। यहाँ किरीटी तरु से तात्पर्य क्षमन शक्ति से है।

अतः स्पष्ट है कि अज्ञेय पर अस्तित्ववाद व ज़ेन बौद्धमत का प्रभाव तो है पर वह अज्ञेय की अनुभविकता के साथ मिश्रित होकर आया है, यांत्रिक रूप में नहीं।

सही

12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'राम की शक्तिपूजा' में विभिन्न स्तरों पर समायोजित द्वंद्वात्मकता की पहचान कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम की शक्तिपूजा अपनी व्यापक अर्थवत्ता व शैल्पिक उत्कृष्टता के लिए प्रख्यात है। शैल्पिक कौशल का ही प्रभाव है कि कविता में भी नाटकीय तत्वों का सहज समावेश हो गया है, द्वंद्वात्मकता की सघन उपस्थिति ऐसा ही एक तत्व है जो पूरी कविता में व्याप्त है।

1. <u>प्रकाश तथा अंधेरे का द्वंद्व</u>: कविता राम के व नैराश्य के अंधेरे 'रवि हुआ अस्त' से शुरू हुई है, यह अंधेरा लगातार गहन होता हुआ 'अमानिशा के घन अंधकार' तक पहुँच गया है परन्तु इसी नैराश्य में 'केवल जलती मशाल' के रूप में प्रकाश भी उपस्थित है। यही प्रकाश राम द्वारा 'शक्ति की मौलिक कल्पना' की प्रतिज्ञा लेने पर 'रवि की ललाट पर प्रथम किरण' का रूप ले लेता है, तथा विजय की आशा दिखलाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लगातार उठते ~~आर~~ – गिरते भावों व जानकी की स्मृतियों के बीच प्रकाश व अंधेरे का सार्वकालिक द्वंद्व कविता में प्रमुखता से चित्रित हुआ है।

2. कल्पना व, स्मृतियों तथा वस्तुगत परिस्थितियों के द्वंद्व को भी कवि ने व्यंजित किया है सीता की स्मृति से ज्यों ही 'हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त' की स्थिति आती है राम को 'भीमा मूर्ति आज रण देखी जो' का स्मरण हो जाता है।

3. रामत्व व रावणत्व का सर्वकालिक, सर्वव्यापक द्वंद्व शक्ति के नैतिकता व अनैतिकता के पक्ष - विपक्ष की स्थितियों के माध्यम से उद्घृत हुआ है। शक्ति साधना के वशीभूत है परन्तु यदि नैतिक व अनैतिक पक्ष दोनों साधनारत हैं तो शक्ति नैतिकता का ही साथ देती है।

वस्तुत: राम की शक्तिपूजा सार्वकालिक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन्हों को ही गाया है जिसने इसकी अर्थव्यापकता में एक और आयाम जोड़ दिया है।

9/11

Gud

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्मावत अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्मावत के अर्थ निर्धारण को लेकर हिन्दी आलोचना में विभिन्न मत प्रस्तावित किये जाते रहे हैं। एक तरफ 'तसव्वुफ' के अर्थ को प्रधानता देते हुए कुछ आलोचक इसे अन्योक्ति बताते हैं तो दूसरी तरफ प्रस्तुत अर्थ को महत्व देते हुए भी कुछ आलोचक गौण अर्थ की उपस्थिति को स्वीकार करते हैं और पद्मावत को समासोक्ति बताते हैं।

अन्योक्ति बताने के कारण के पीछे कविता के अंतिम अंश में उपस्थित चौपाई है -

"तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल बुधि पदमिनि चीन्हा।"

आलोचकों का मानना है कि पद्मावत का मुख्य उद्देश्य तसव्वुफ की अभिव्यक्ति करना ही है जो सूफी परंपरा से सुसंगत भी है। परन्तु साहीव शिरेफ सम विद्वानों ने इस भाव-योजना पर प्रश्न खड़े करते हुए पद्मावती-रत्न सेन विवाह के बाद की कथा को इस भाव-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

योजना से असंगत बताया है। पुनः
~~दूसरी तरफ आचार्य रामचंद्र~~
जायसी ने नागमती को भी पद्मावती के समान ही महत्व दिया है यदि वह 'दुनिया - धंधा' को व्यक्त कर रही होती तो उसके सती होने पर स्वर्ग उसी प्रकार दीप्तिमय क्यों होता जैसा पद्मावती के होने पर।

आचार्य शुक्ल ने प्रस्तुत अर्थ को प्रमुखता देते हुए भी तसव्वुफ के संदर्भ को स्वीकार कर पद्मावत को समासोक्ति बताया है तथा कहा है कि लोक-कथा की रचना करना जायसी का उद्देश्य था परन्तु तसव्वुफ की व्यंजना भी जहाँ-तहाँ होती रही है यथा—

~~दसव~~ गढ़ तस बाँक जैस तोरी काया
पुरुष देखि ओही कै छाया
दसवँ दुआर ताल कै लेखा
उलट दिहिटि जो लाव सो देखा"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन दोनों के विपरीत विजयदेव नारायण साही का मानना है कि पद्मावत अपनी प्रकृति में प्रस्तुत अर्थ की ही व्यंजना करता है, 'तसव्वुफ यहाँ सिर्फ एक मुहावरा मात्र है जो अन्य मुहावरों की तरह ही आया है। इस प्रकार साही पद्मावत को कथात्मक (एलिगरी) व 'रोमाँचक प्रेमाख्यानक काव्य' बताते हैं।

तार्किक रूप से साही का मत ही उचित लगता है। ~~क्योंकि~~ कई विद्वानों ने अंतिम अंश की प्रामाणिकता पर भी संदेह किया है। कहना न होगा प्रेम की पीर के कवि जायसी का उद्देश्य लोक कथा कहना ही था।

Good 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भ्रमरगीतसार में सूर के विरह वर्णन के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यताओं का उल्लेख करते हुए उससे अपनी तार्किक सहमति या असहमति प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भ्रमरगीत सार का विवेचन करते हुए आचार्य शुक्ल ने एकतरफ तो 'विप्रलंभ श्रृंगार' का सर्वोत्तम उपालम्भ काव्य बताया है तो दूसरी तरफ इसके विषयगत विस्तार ~~भावगत~~ की संकीर्णता पर प्रश्न भी खड़े किए हैं। वे सूर की संगीतात्मकता व अलंकार-प्रयोग को प्रशंसित करते हुए भी उनकी अति अलंकार प्रियता पर खीझ जाहिर करते प्रतीत होते हैं।

आचार्य शुक्ल की प्रमुख मान्यताओं का विवेचन किया जाए तभी उससे सहमत या असहमत होना संभव होगा।

जहाँ विप्रलंभ श्रृंगार के सुन्दरतम उपालम्भ काव्य की स्थापना की बात है तो यह बात अतिशयोक्ति नहीं कि सूर ने विप्रलंभ के सभी पक्षों का जैसा मार्मिक वर्णन किया है वैसा अन्यत्र अनुपलब्ध है। चाहे वह पूर्वराग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो, मान हो प्रवास हो या कारण हो। उनके यहाँ ~~दस~~ नौ दशाओं से आगे ~~दस दशाओं~~ कई अन्य दशाओं का उल्लेख मिलता है जो अन्यत्र कहीं नहीं मिलता ~~यथा~~ सूर की गोपियाँ प्रकृति को भी अपने विरह में शामिल कर 'संवेदन - आरोप' करते हुए कहती हैं "मधुबन तुम कत रहत ~~हरे~~ हरे विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे"

जहाँ तक विषयगत विस्तार की सीमितता का प्रश्न है तो यह बात भी सही है कि सूर की विभाव योजना यमुना के तट व गोकुल से बाहर नहीं निकली है। वे एक ही बात को बार - बार अलग - अलग ढंग से कहते रहे हैं तथा वर्णन की नवीनता पर ध्यान केंद्रित करते रहे हैं। इसका कारण उनके अन्धेपन को भी माना जा सकता है।

अति अलंकार प्रियता के संदर्भ में कहीं - कहीं देखने में आया है कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूर ने परिमिति का विचार न रखते हुए अतिशयोक्ति पूर्ण ~~कल्पना~~ उपमाएँ कर डाली हैं यथा—

"हरि कर राजत माखन रोटी
ज्यों यूधर बराह सह धरती, हरि परसन की कोटी"

परन्तु कुछ स्थानों को छोड़कर आचार्य शुक्ल की मान्यताओं से सहमत होना मुश्किल है।

मानना होगा कि आचार्य शुक्ल ने सूर के रचनाकर्म की हृदय आलोचना की है और इसकी अत्यधिक मान्यताएँ तार्किक ही हैं।

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'असाध्य वीणा' कविता मार्क्सवादी रचना-दृष्टि को खंडित करने का रचनात्मक उपक्रम है।" विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मार्क्सवाद द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को स्थापित करते हुए आर्थिक संरचना को ही निर्णायक महत्व प्रदान करता है तथा साहित्य रचना को उद्देश्य पूर्ण कार्य बताकर उद्देश्य भी निर्धारित कर देता है।

- यह उद्देश्य है - शोषितों को शोषण के प्रति जागृत करना व क्रांति के लिए तैयार करना। लेनिन ने कहा भी है- "साहित्य क्रान्ति के लिए हथियार मात्र है"

दूसरी तरफ अज्ञेय प्रयोगवादी कवि हैं एवं 'अनुभूति की प्रामाणिकता' व व्यक्तित्व को प्रधानता देते हुए मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति पर रचना का प्रभाव उसके व्यक्तित्व के अनुसार ही होना चाहिए। वे रचना को स्वायत्त कर्म मानते हुए स्थापित करते हैं कि "साहित्य का उद्देश्य समाज को बदलना नहीं है, वह अधिक से अधिक व्यक्ति को संस्कारित कर सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिल्प के महत्व को लेकर भी मार्क्सवाद व अज्ञेय में मतभेद है। जहाँ एकतरफ अज्ञेय शिल्प तत्व को प्रधानता देते हुए इसे रचनाकार और गैर रचनाकार का भेदक बताते हैं वहीं मार्क्सवाद शिल्प को खारिज करते हुए वस्तु को महत्व देता है।

जहाँ मार्क्सवाद 'साधना' व 'आस्था' को नकारता है वहीं अज्ञेय इसे स्थापित करते हैं।

अज्ञेय के इन्हीं विचारों को असाध्यवीणा में स्थापित किया गया है। वे 'सब अपने-अपने काम लगे, युग पलट गया' कहते हुए व्यक्तित्व तत्व को महत्व देते हैं। दूसरी तरफ शैल्पिक कौशल से बिम्बात्मकता, अलंकारों का सहज प्रयोग एवं प्रियंवद की क्रिया के प्रतीक से क्षमन तत्व की व्याख्या करते हैं।

वे प्रियंवद द्वारा 'स्वयं को खोकर' व क्षमनशक्ति को 'सबमें गाते'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बताकर ईश्वर व आस्था की स्थापना करते हैं।

• वस्तुतः अस्तित्ववाद भौतिकवाद की
• जड़ मान्यताओं का खण्डन करते हुए इसकी सीमाओं से बाहर निकलती है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' प्रगतिवादी चेतना के विद्रोही कवि हैं जो मानववादी दृष्टिकोण को प्रस्तावित करते हुए जनजीवन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट करते हैं।

नागार्जुन का काव्य जनजीवन से संबंधित यथार्थ का काव्य है। यही कारण है कि उनके यहाँ प्रेम अपने गार्हस्थिक स्वरूप में आता है –

" घोर निर्जन में प्रकृति ने दिया है पाल
याद आता है तुम्हारा सिंदूर तिलकित भाल'

वे किसी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त न करते हुए मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति को प्राथमिकता देते हैं यथा –

" क्या है दक्षिण, क्या है वाम
जनता को रोटी से काम'

उनके यहाँ प्रकृति भी उसी रूप में आती है जो साधारण ग्राम्य जीवन में उपस्थित है। चाहे वह चूहों की ~~शिकस्त होया~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विकृत हो या 'छिपकलियों की गश्त' या फिर कभी कुतिया। अभिजात्यवादी सौन्दर्य आता भी है तो आनुभविक प्रामाणिकता के साथ, काल्पनिक स्वरूप में नहीं। यथा

"कहाँ गया धनपति कुबेर वह
कहाँ गई वह उसकी अलका ?"

नागार्जुन ने सिर्फ गुलाब की सुंदरता को महत्व देने वाले कवियों को खारिज करते हुए 'हरे छिगने चने' को भी काव्य का विषय बनाया है और कुरटों को भी।

मानव प्रेम का सर्वोत्कृष्ट रूप वहाँ दर्शित होता है जहाँ वे एक तरफ बेलछी काण्ड से व्यथित होकर क्रांति का आह्वान कर दलितों के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं तो दूसरी तरफ नेताओं द्वारा हवाई सर्वेक्षण किये जाने पर तीक्ष्ण व्यंग्य कसते हैं।

" हरिजन गिरिजन भूखे मरते मंडोलों
-वन में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुम रेशम की साड़ी गटे झूठी फिराओगे मे"

दूसरी तरफ वे ऐसी आजादी को भी नकारते हैं जो पेट भरने में सक्षम न हो।

कहना न होगा नागार्जुन मानवतावादी, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।

Good 15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है।

औसत, रेंज है।

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यखण्ड आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत ललित निबंध 'कुटज' से उद्धृत है। यहाँ द्विवेदी जी कुटज की अदम्य जिजीविषा की चर्चा कर रहे हैं।

व्याख्या: द्विवेदी लेखक कहता है कि अत्यधिक अभावों के बावजूद कुटज ने हार नहीं मानी। वह सम्पूर्ण जीवनीशक्ति से ओत-प्रोत हो उल्लास व उत्साह का अनुभव कर रहा है। वह प्रत्येक हार में अपनी विजय ढूंढता है तथा तेजोदीप्त रहता है।

विशेष: 1. 'हारों में विजय है' — विरोधाभास अलंकार का प्रयोग

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. भाषा तत्समबहुला परन्तु बोधगम्य है
3. चिंतन प्रधान शैली व स्वगत कथनों का प्रयोग

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था– "विद्यापति कवि के गान कहाँ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया– ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश आँचलिक धारा के स्तम्भ 'फणीश्वर नाथ रेणु' कृत 'मैला आँचल' से उद्धृत है। यहाँ ~~प्रश~~ डा० प्रशान्त अपने मन में ~~[illegible]~~ लोगों की स्थिति के विषय में चिन्तन-मनन कर रहे हैं।

व्याख्या: डा० प्रशान्त दिनकर के साहित्य के प्रश्न को उठाते हुए स्वयं को ही उत्तर दे रहे हैं कि अत्यधिक गरीबी व जहालत के बावजूद, जीवन को मूलभूत सुविधाओं के बावजूद लोग लोकगीत व जीवन-राग में मस्त होकर जी रहे हैं। विद्यापति के गीतों ~~के~~ को गा-गाकर ~~[illegible]~~ जीवनोल्लास व त्यौहार मना रहे हैं। ~~[illegible]~~

विशेष: 1. 'अभावों के बावजूद भारतीय ग्रामीण जीवन में संतोष व उल्लास का भाव बना रहता है'– इसी भाव की मार्मिक व्यंजना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग किया गया है

3. भाषा तत्समीपन को लिए हुए है जो चिंतन मनन शैली की विशेषता है। रेणु ने ~~आं~~ देशज भाषा के बीच उच्चवर्ग के पात्रों के संदर्भ में तत्समीकृत भाषा का प्रयोग किया है।

ठीक है

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) युद्ध क्या गान नहीं है? रुद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। ध्वंसमयी महामाया-प्रकृति का वह निरंतर संगीत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश राष्ट्रीय सांस्कृतिक परम्परा के प्रसिद्ध नाटककार 'जयशंकर प्रसाद' के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से उद्धृत है। ~~यहाँ श्रीमत्सर्व बंधुवर्मा विजया~~ यहाँ देवसेना द्वारा कठिन परिस्थितियों में भी गीत गाये जाने की इच्छा का सौन्दर्यीकरण हुआ है।

व्याख्या: युद्ध भी तो एक तरह का संगीत ही है, गीत ही है। ~~[illegible]~~ ईश्वर (शिव) के शृंगीनाद व मृत्यु के तांडव के साथ जब शस्त्रों के स्वर मिलते हैं तो संगीत का सृजन होता है। यही सृजन - ध्वंस का क्रम चलता रहता है। यही प्रकृति का नैर-तर्य युक्त संगीत है।

विशेष: 1. युद्ध का सौन्दर्यीकरण व गौरवीकरण किया गया है।
2. तत्सम प्रधान, संगीतमयी, लयात्मक भाषा का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. युद्ध व संगीत में 'रूपक' संबंध की स्थापना की गई है।

4. प्रकृति के नियमों (ध्वंस व सृजन) की तुलना संगीत से हुई है।

5. प्रस्तुत पंक्तियाँ देवसेना के भावुक व्यक्तित्व को व्यंजित करती हैं,

5/10

पंक्तियों के माध्यम से प्रसाद की 'अहिंसा'-हिंसा संबंधी दृष्टि भी प्रकट हुई है। इसकी भी चर्चा करें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यखण्ड आधुनिक हिन्दी नाटक के पुरोधा मोहन राकेश कृत नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से उद्धृत है। यहाँ प्रियंगुमंजरी मल्लिका को राजनीति व साहित्य में भेद बताते हुए भावना व सजगता का अंतर बता रही है।

व्याख्या: प्रियंगु कहती है कि राजनीति करने और साहित्य रचने में अंतर है, साहित्य में प्रत्येक क्षण का महत्व भले न हो, राजनीति में है। छोटी सी गलती भी बहुत भारी पड़ सकती है, साम्राज्य के नाश का कारण बन सकती है। यहाँ भावनाओं को त्यागकर व्यक्ति को प्रत्येक क्षण जाग्रत रहना पड़ता है।

विशेष: 1. प्रियंगुमंजरी के 'बौद्धिक' व भाव-निरपेक्ष व्यक्तित्व के सापेक्ष राजनीति के चरित्र का वर्णन किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. तत्सम शब्दों का प्रयोग करते हुए भी तद्भव को ही प्रधानता दी गई है जो पाठक को नाटक से जोड़े रखता है।

3. परोक्ष रूप से यह बताया गया है कि साहित्य का मूल ~~प्रश्न~~ सम्बन्ध भावना से है।

4. साहित्य व सत्ता के बीच के अन्तरों को स्पष्ट किया गया है।

Good 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) बच्चों की शक्लें और सूरतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर [illegible]

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यखण्ड नई कहानी के पुरोधा लेखक कमलेश्वर की कहानी 'खोई हुई दिशाएँ' से उद्धृत है। यहाँ लेखक शहरीकरण व उससे उत्पन्न कृत्रिमता को व्यंजित कर रहा है।

व्याख्या: कमलेश्वर कहते हैं कि बच्चों पर अभी शहर की कृत्रिम जीवनशैली का असर नहीं हुआ है इसलिए उनके भाव स्थूल नहीं है पर उनकी माताओं में कृत्रिम घमंड स्पष्ट देखा जा सकता है। यहाँ माताओं से तात्पर्य शहरी जीवन शैली में रम चुके लोगों से है। यह जीवनशैली आधुनिक युग का सत्य है जिसे ग्रामीण जीवन से आया मध्यवर्गीय व्यक्ति न स्वीकार कर पा रहा है, न ही उससे वापस जा पा रहा है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

विशेष 1. चिन्तन प्रधान, विश्लेषणात्मक शैली

2. मात्राओं के माध्यम से शहरी मध्यवर्ग की भौतिक शैली पर व्यंग्य किया गया है।

3. तत्सम और तद्भव शब्दों का सुन्दर सामंजस्य किया गया है बीच-बीच में खुमार जैसे उर्दू शब्द भी डाले गये है अतः कथ्योचित भाषा का प्रयोग किया गया है।

ठीक है

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश की प्रसिद्धि नाटकों के प्रणयन को लेकर एक सफल नाटककार के रूप में तो है ही उनकी रंगमंचीय दृष्टि संगत उनके नाटकों की रंगमंचीयता को भी आलोचकों व रंग-निर्देशकों ने भूरि-भूरि सराहा है।

मोहन राकेश, प्रसाद की दृष्टि से विपरीत रंगमंचीयता को नाटक की सफलता का अनिवार्य तत्व मानते थे तथा पश्चिमी रंगमंच से अलग हिन्दी के मौलिक रंगमंच की स्थापना करना चाहते थे।

जहाँ एक तरफ पश्चिमी रंगमंच तकनीक व संसाधन तत्व पर आधारित है वहीं मोहन राकेश ने शब्द तत्व व अभिनय तत्व पर आधारित मौलिक रंगमंच की कल्पना की जिसमें कम से कम दृश्यों, पार्श्व ध्वनियों के माध्यम से प्रभाव बढ़ाया जा सके।

'आषाढ़ का एक दिन' भी उनकी इसी दृष्टि का वाहक है। नाटक में तीन अंक हैं और तीनों ही एक ही दृश्य के माध्यम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

से संपादित किये जा सकते हैं। अन्तिम अंक में एकदीपक बुझ जाता है, चादर थोड़ी और फट जाती है ~~तथा~~ अन्य कोई बृहद परिवर्तन देखने को नहीं मिलता

पात्रों के भावों की अभिव्यक्ति के लिए रंगसंकेत व अभिनय संकेत प्रचुरता में उपलब्ध हैं, ~~प्रस~~ राकेश के शैल्पिक कौशल का ही कमाल है कि लम्बे स्वगत कथन भी नाटक को बोझिल नहीं बनाते।

राकेश ने ध्वनियों के प्रयोग पर अत्यधिक बल दिया है। कालिदास के कश्मीर प्रस्थान को घोड़ों की टापों की आवाज बढ़ने और फिर क्षीण होने से व्यंजित करना, वर्षा का भावानुकूल प्रयोग उनकी रंगदृष्टि के समानान्तर चलता है।

वस्तुतः आषाढ़ का एक दिन जिस शिल्प को धारण करता है वह राकेश की रंगमंचीय दृष्टि को मूर्त रूप देने के लिए ही प्रयुक्त है एवं ~~प्रसाद~~

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से मौलिक रंगमंच की स्थापना में पूर्णतः सफल रहे हैं।

11/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आंचलिक उपन्यासों में 'मैला आंचल' के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास के रूप में समादृत होने में उसकी भाषा-शैली की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंचलिक उपन्यास का महत्व उसकी ~~शैली~~ भौगोलिक विशिष्टता में है। यहाँ लेखक का उद्देश्य यह नहीं होता कि रचना सार्वदेशिक महत्व को धारण करे बल्कि अंचलविशेष में रमकर, अंचल को ही नायकत्व प्रदान कर अंचल के प्रत्येक अंग को उद्घाटित कर देना ही उपन्यासकार का उद्देश्य होता है। रेणु लिखते हैं - "इसमें फूल भी हैं, धूल भी है, गुलाब भी है, कीचड़ भी है और काँटे भी - मैं किसी से अपना दामन बचाकर नहीं निकल पाया"।

रेणु के इसी उद्देश्य को सार्थक बनाने में उनकी भाषा शैली का प्रमुख योगदान रहा है।

रेणु ने भाषा में देशज शब्दों को प्रधानता देते हुए उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया है जो पूर्णिया जिले के गाँव को पाठक की आँखों में उतार दे। विदेशज व अंग्रेजी शब्द भी विकृत होकर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

लोकप्रचलित रूप में आए हैं यथा -
मैंसचरमन, रायबरेली इत्यादि।

बहेरा चिथरू यहाँ गिरफ्तार नहीं होता है बल्कि 'गिरफ्फ' होता है।

भाषा के स्तर पर दूसरा प्रयोग लोकगीतों व लोकजीवन में प्रचलित मुहावरों के प्रयोग का है। चाहे बिदापत नृत्य की धुन हो या जाट-जटिन का खेल या फिर सुरंगा-सदाबृज की कथा, सब अपने खालिस रूप में उपस्थित होकर पाठक को मेरीगंज ले जाते हैं।
यथा -
"नायक जी हो नायक जी
खोल देहो किबरिया हो नायक जी"
एवं
'याद जो आवे प्यारी तोहरी सुरतिया
साले करिजवा में तीर जी'

मुहावरों का प्रयोग भी सुन्दर एवं स्पष्ट है यथा
'जोरू-जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रेणु ने ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग यथा 'धिन्ना - तिन्ना - तिन्ना' करते हुए पाठक को लोकसंगीत मय कर दिया है।

लोकभाषा के साथ-साथ जहाँ-जहाँ उच्च वर्ग के पात्र आए हैं वहाँ चिन्तन मनन शैली की तत्सम भाषा से भी परहेज नहीं किया गया है।

कहना न होगा कि भाषा-शैली ही वह प्रमुख कारण है जिससे रेणु आंचलिक उपन्यास धारा में सर्वोच्चता को प्राप्त करते हैं।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

दिव्या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर 6 अवलंबित आधुनिक चेतना का उपन्यास है जो अपनी नारी दृष्टि, वर्ण व्यवस्था के स्वरूप का उद्घाटन, मानववाद व ऐतिहासिक दृष्टि के कारण ~~प~~ समादृत है।

दिव्या ~~में~~ में यशपाल मौलिक इतिहास दृष्टि स्थापित करते हुए इतिहास को उपयोगिता की दृष्टि से परखते हैं वे लिखते हैं ~~कि~~ "वर्तमान में अपने आप को असमर्थ पाकर भी हम इतिहास में अपनी क्षमताओं का परिचय पाते हैं" तथा इतिहास को 'विश्लेषण की वस्तु' बताते हुए वे इतिहास ~~की~~ के उपयोगितावादी स्वरूप को प्रस्तावित करते हैं।

मानववाद का संप्रेषण करते हुए यशपाल मनुष्य की क्षमताओं को असीमित पाते हैं तथा ~~सम~~ मारिश के माध्यम से समस्त अलौकिक सत्ताओं का खण्डन करते हैं वे लिखते हैं " मनुष्य से बड़ा है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सिर्फ उसका विश्वास और उसका अपना ही रचा हुआ विधान। मनुष्य स्थितियों में परिवर्तन ही नहीं करता, उनका निर्माण भी करता है"

अन्त में दिव्या द्वारा मारिश का चयन भौतिकवाद की ही विजय है।

नारी दृष्टि व वर्ण-भेद के उद्घाटन को लेकर दिव्या का महत्व अन्यतम है। वे बताते हैं कि किस प्रकार समस्त धार्मिक संरचनाएँ नारी को या तो भोग्य वस्तु बना देती हैं या फिर त्याज्य।
"कुलमहादेवी का अधिकार, कुलवधू का सम्मान आर्य पुरुष का प्रश्रय मात्र है। वह नारी का सम्मान नहीं उसे प्राप्त करने वाले पुरुष का सम्मान है"

वर्ण-व्यवस्था को उद्घाटित करते हुए वे प्रश्न खड़े करते हैं कि "जन्म का अपराध, यदि यह अपराध है तो इसका मार्जन किस प्रकार सम्भव है-
जन्म के अपराध का बदला।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except question number in this space)

मनुष्य का दया दैत से है

इस प्रकार तत्कालीन सामाजिक स्थितियों के उद्भासन व मौलिक सामाजिक चेतना के कारण निराला का महत्व अक्षुण्ण है।

Good 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation